United

जनहित
राष्ट्रहित
के लिये
सदा तत्पर

25 गांवों के विकास के
लिये प्रयत्नशील एच.फ.आई.

यूनाइटेड
लखनऊ
राष्ट्रीय पाक्षिक समाचार पत्र

एच.फ.आई.हेल्थ केयर योजना
के नि:शुल्क शिविरों का शतक पूर्ण

आज का मंत्र वाक्य

युग की आवश्यकता है ऐसे ज्ञान की, जो मनुष्य को ईश्वर की पहचान करा दे, सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे सके, अधर्म की राह से बचा सके!
श्रीकृष्णचेतनावतार देवी माँ कुसुम जी.

लखनऊ से प्रकाशित प्रवेशांक वर्ष 1/अंक 1/पृष्ठ 6/मूल्य रु.5.00 दिनांक 1 जून, 2014 दिन–रविवार प्रकाशन स्थान लखनऊ

ई-सिगरेट दिलायेगी धूम्रपान से मुक्ति

एच.एफ.आई. हेल्थ केयर योजना

ब्रिटेन में पिछले दो सालों में इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट (ई–सिगरेट) का इस्तेमाल करने वालों की संख्या बढ़कर तिगुनी हो गई है. स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने वाली संस्था एक्शन ऑन स्मोकिंग एण्ड हेल्थ (ऐश) के मुताबिक यह संख्या करीब 21 लाख तक पहुंच गई है. संस्था का कहना है कि धूम्रपान करने वाले या धूम्रपान छोड़े चुके लोगों में से आधे से ज्यादा ने ई–सिगरेट का कस लिया है. साल 2010 में यह संख्या आठ प्रतिशत थी. ऐश के इस सर्वेक्षण में 12,000 से ज्यादा धूम्रपान करने वाले वयस्कों को शामिल किया गया. एक अन्य अध्ययन में यह बात सामने आई कि ई–सिगरेट पीने वाले अधिकांश लोग धूम्रपान कम करने के लिए इसका सहारा ले रहे थे. ऐश का कहना है कि ई–सिगरेट पीने वाले ऐसे लोगों की संख्या मात्र एक फीसदी है, जिन्होंने कभी धूम्रपान नहीं किया. इस संस्था ने साल 2010 से ई–सिगरेट के इस्तेमाल पर कई सर्वेक्षण किए हैं जिनमें सबसे ताजा मार्च में किया गया. ई–सिगरेट इस्तेमाल करने वाले लोगों में से लगभग सात लाख लोग धूम्रपान छोड़ चुके हैं वहीं करीब 13 लाख लोग सिगरेट और तंबाकू के साथ इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट का इस्तेमाल कर रहे हैं. नियमित रूप से सिगरेट पीने वाले लोगों में ई–सिगरेट का इस्तेमाल करने वालों की संख्या साल 2010 के 2.70 फीसदी की तुलना में 2014 में 17.70 प्रतिशत तक पहुँच चुकी है. जब धूम्रपान छोड़ चुके लोगों से ई–सिगरेट इस्तेमाल करने की वजह पूछी गई तो 71 फीसदी लोगों का जवाब था कि वे धूम्रपान छोड़ने में इसकी मदद चाहते थे. वहीं धूम्रपान करने वाले 48 प्रतिशत लोगों का कहना था कि उन्होंने तंबाकू की मात्रा को कम करने के लिए ऐसा किया जबकि 37 फीसदी लोगों की राय थी कि उन्होंने पैसे बचाने के लिए ई–सिगरेट का विकल्प चुना. ऐश के मुख्य कार्यकारी डेबोरा अर्नोट कहती हैं, ष्पिछले चार सालों में ई–सिगरेट पीने वालों की संख्या में नाटकीय बढ़ोतरी बताती है कि धूम्रपान करने वालों का झुकाव तेजी से इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट की तरफ हो रहा है क्योंकि वे धूम्रपान कम करना चाहते हैं या छोड़ना चाहते हैं.ष द स्मोकिंग टूलकिट स्टडी द्वारा इंग्लैंड में कराए गए एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई है कि धूम्रपान छुड़वाने में मददगार अन्य निकोटीन उत्पादों की तुलना में ई–सिगरेट ज्यादा लोकप्रिय हो रही है. इस अध्ययन में यह बात भी सामने आई है कि इंग्लैंड में पिछले साल सिगरेट छोड़ने वालों की संख्या बढ़ी है और धूम्रपान की दर लगातार गिर रही है. अध्ययन दल के प्रमुख प्रोफेसर रॉबर्ट वेस्ट कहते हैं, ष्ई–सिगरेट के बारे में दावा किया जाता है कि इससे फिर से धूम्रपान की ओर लौटने का खतरा रहता है लेकिन हमें इस दावे के समर्थन में कोई साक्ष्य नहीं मिला.ष वे कहते हैं, ष्इसके विपरीत, ई–सिगरेट धूम्रपान को कम करने में काफी मददगार हो सकती हैं क्योंकि बड़ी संख्या में लोग इनका इस्तेमाल सिगरेट छोड़ने के लिए कर रहे हैं.ष डेबोरा अर्नोट ने कहा, ष्ई–सिगरेट के विज्ञापन को नियंत्रित करना काफी जरूरी है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बच्चे और धूम्रपान न करने वाले इसकी चपेट में न आएं. हमारे शोध में ई–सिगरेट से सिगरेट की लत लगने जैसे कोई साक्ष्य नहीं मिले हैं.ष ऐश के सर्वेक्षण के अनुसार ई–सिगरेट पीने वाले अधिकांश लोग ऐसे रिचार्जेबल उत्पाद का इस्तेमाल करते हैं जिसका कार्ट्रिज बदला जा सके. धूम्रपान का समर्थन करने वाले एक समूह फॉरेस्ट के निदेशक साइमन क्लार्क ने कहा कि वे ई–सिगरेट के बढ़ते चलन का स्वागत करते हैं और इस बात को लेकर खुश हैं कि लोगों के पास विकल्प है. लेकिन वह साथ ही कहते हैं कि ई–सिगरेट का इस्तेमाल करने वाले अधिकांश लोग सिगरेट छोड़ने की बजाय केवल इसका प्रयोग कर रहे हैं. उन्होंने कहा, ष्धूम्रपान छोड़ने वालों की संख्या में उल्लेखनीय गिरावट नहीं आई है. अधिकांश धूम्रपान करने वालों को अभी भी लगता है कि इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट या ई–सिगरेट काफी शुरुआती दौर में हैं और इनकी तकनीक के सुधार में कुछ साल लगेंगे. **साभार बीबीसी न्यूज**

एच.एफ.आई. पर्यावरण संरक्षण योजना के अन्तर्गत

एच.एफ.आई. वृक्षारोपण अभियान

लखनऊ/5 मई, 2014

ह्यूमैनिटी फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया के तत्वावधान में अभिनव मोतीवाल जी के निर्देशन में, ह्यूमैनिटी फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया के सैकड़ों कार्यकर्ताओं व ह्यूमैनिटी फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया द्वारा संचालित विद्यालय के बच्चों ने बाराबंकी जनपद के किंवाड़ी गांव में सौ वृक्षों का वृक्षारोपण किया और ग्रामीणों को पर्यावरण के महत्व के विषय में जानकारी दी।

श्री अभिनव मोतीवाल जी ने ग्रामवासियों को सम्बोधित करते हुये कहा कि सभी को वृक्षों की सुरक्षा, अपने परिवार के सदस्य की तरह ही करनी चाहिये, क्योंकि हर वृक्ष, हमारे लिये देवता के समान है, वह हमेशा हमें देता ही रहता है, जब तक जीवित रहता है तक फूल, फल व पत्तियाँ देता है, धूप से सुरक्षा करता है, मिट्टी को कटने से बचाता है, आक्सीजन देता है और जब सूख जाता है तो जलाने के लिये ईंधन अथवा फर्नीचर उद्योग हेतु लकड़ी प्रदान करता है। सभी लोगों को संकल्प लेना चाहिये कि वे अपने जीवन में हर वर्ष, अपने जन्मदिन, अपने परिवारजनों के जन्मदिन पर एक–एक वृक्ष अवश्य लगायें, जिससे न केवल पर्यावरण सुरक्षित रहेगा, बल्कि समाज में ईंधन व उद्योगों में भी भारी योगदान मिलेगा।

इस अवसर पर 'वाणी शिक्षा मन्दिर' के सैकड़ों बच्चों ने भी उत्साहपूर्वक वृक्षारोपण अभियान में हिस्सा लिया, कोई गड्ढा खोद रहा था तो कोई पानी लेकर दौड़ रहा था। सभी बच्चों ने वृक्षारोपण में जो उत्साह दिखाया, उससे सभी ग्रामवासी व एच.एफ.आई. सदस्य बहुत प्रभावित हुये।

इस अवसर पर किंवाड़ी ग्राम के प्रधान श्री ज्ञान सिंह यादव ने अपना बहुमूल्य समय दिया और संस्था के कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि इस संस्था के द्वारा पूर्व में भी कई बार निःशुल्क चिकित्सा शिविर, इस ग्राम में लगाये जा चुके हैं, जिससे अनेक ग्रामवासियों को स्वास्थ्य लाभ हुआ है, और इसी तरह से और भी कैम्प लगाये जायें तो अच्छा रहेगा।

संस्था की संस्थापिका व अध्यक्षा श्रीमती पूनम जी ने भी उक्त कैम्प में सदस्यों को प्रोत्साहित करते हुये कहा कि सभी को समाज के सामूहिक उत्थान की दिशा में मिल कर प्रयास करना चाहिये, जिससे समाज में चारों ओर खुशहाली आयेगी और आपसी वैमनस्य मिटेगा, सामाजिक कुरीतियों का जड़ से नाश सम्भव हो सकेगा।